CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री वैभवलक्ष्मी व्रतकथा

धन सम्पदा, सुख शांति और ऐश्वर्य प्रदान करने वाले
पूजन विधान तथा चमत्कारी असली प्राचीन व्रत कथा

मनोज पब्लिकेशन्स

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

॥ श्री गं गणपतये नमः ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सभी कामनाओं को पूर्ण करने वाली तथा सब दुखों को हरने वाली शास्त्रसम्मत एवं प्रामाणिक

श्रीवैभवलक्ष्मी व्रतकथा

संपूर्ण विधि, चमत्कारों की अनूठी गाथाएं, मां महालक्ष्मी के आठों स्वरूपों के सुंदर दर्शन, सर्वमनोरथ को पूर्ण करने वाला रंगीन श्रीयंत्र, श्री लक्ष्मी चालीसा, स्तुति एवं आरती सहित

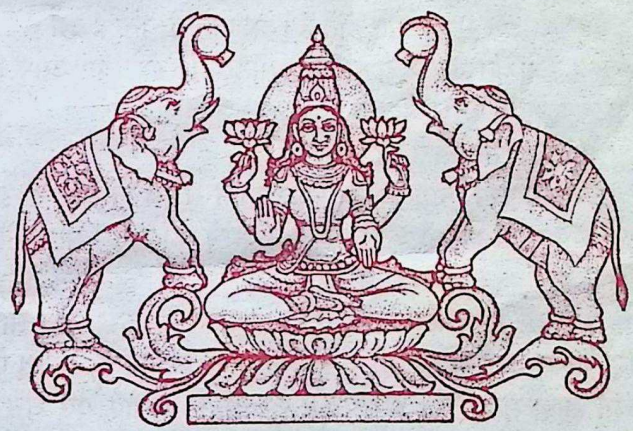

मनोज पब्लिकेशन्स

7/-

761 मेन रोड बुराड़ी, दिल्ली-110084

फोन : 27611116, 27611349, फैक्स : 27611546

शोरूम : 1583-84, दरीबा कलां, चांदनी चौक, दिल्ली-6

फोन : 23262174, 23268216, मोबाइल : 9818753569

ISBN : 978-81-8133-821-1

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

लक्ष्मी प्राप्ति कैसे हो

अलंकृतो मया जन्तु, सर्वो भवति पूजितः।
निर्धनः शिवतुल्योऽपि सर्वैरप्यभिभूयते॥

मां लक्ष्मी कहती हैं—"मेरे द्वारा अलंकृत प्राणी सबसे अधिक पूज्य होता है, किन्तु निर्धन प्राणी, भले ही वह शिव के समान क्यों न हो, सर्वत्र तिरस्कार का भागी होता है।"

मां लक्ष्मी का यह कथन अटल सत्य है। आप स्वयं को देखें कि धन के बिना आपका जीवन क्या है? संसार के समस्त सुख और ऐश्वर्य धन से ही प्राप्त होते हैं। आपकी प्रत्येक इच्छा धन की मोहताज है। धन के बिना बंगला, मोटरकार तो क्या, आप एक कील तक नहीं खरीद सकते।

मगर धन प्राप्त कैसे हो?

मां लक्ष्मी की कृपा के बिना धन प्राप्ति संभव नहीं है, तो प्रश्न उठता है कि मां लक्ष्मी की कृपा प्राप्त करने का सुगम मार्ग कौन-सा है? प्रत्येक दुखी-दरिद्री व्यक्ति के मन में यह प्रश्न कौंधता रहता है। कुछ लोग जप-तप की बात सोचते हैं, कुछ लोग सोचते हैं कि गलत कार्य करके ही धन कमाया जा सकता है, किन्तु ऐसा सोचने वाले गलत हैं। इस प्रकार अधर्म से कमाए गए धन को लक्ष्मी की कृपा नहीं कहा जा सकता। ऐसा धन कुकर्मों से आता है और कुमार्गों से चला जाता है। घर में बीमारियां और कोर्ट-कचहरी के चक्कर में सारा पैसा जाया जाता है। समाज में बदनामी होती है, लोग अच्छी नजरों से नहीं देखते। संतान बदचलन हो जाती है। अतः प्रश्न उठता है कि सत्मार्ग से धन कैसे प्राप्त हो? इस युग में इसका सबसे सरल उपाय है—**मां वैभव लक्ष्मी की उपासना और समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाला व्रत।**

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

किस-किसने किया यह व्रत

महालक्ष्मी का प्राकट्य समुद्र मंथन से हुआ था। चौदह रत्नों में से ये भी एक रत्न हैं। तेजोमयी, प्रकाशिनी मां लक्ष्मी का वरण श्री विष्णु ने किया। इसीलिए ये विष्णुप्रिया कहलाईं। ये धन-धान्य, सुख-ऐश्वर्य, यश-कीर्ति व समृद्धि की अधिष्ठात्री हैं। इनकी पूजा-आराधना व व्रत-उपवास से मनोवांछित फल की प्राप्ति होती है। मां महालक्ष्मी की कृपा से भोग और मोक्ष दोनों की प्राप्ति होती है।

लक्ष्मीजी का प्रगट होना और श्री विष्णुजी का उन्हें वरण करना, यह सब भगवान की लीला है, वास्तव में तो मां लक्ष्मी आदिशक्ति हैं, जिन्होंने स्वयं इस संसार की रचना की है। पुराणों में तो यहां तक कहा गया है कि मां लक्ष्मी की माया के रूप में ही ब्रह्मा-विष्णु-महेश की उत्पत्ति हुई है, जो आदिशक्ति की इस सृष्टि की रचना, पालन व संहार करते हैं। श्रीविष्णु की शक्ति हैं महालक्ष्मी। इसीलिए मां महालक्ष्मी अपनी संतानों की समस्त कामनाओं को पूर्ण करती हैं। जगत का पालन करती हैं वे महालक्ष्मी।

इनके अनेक नाम और रूप हैं, किन्तु **'वैभव लक्ष्मी व्रत'** में 'श्रीयंत्र' के साथ इनके आठ स्वरूपों की विशेष रूप से अर्चना व ध्यान किया जाता है। श्री लक्ष्मीजी को चूंकि 'श्री' भी कहा गया है, इसीलिए इनके यंत्र को 'श्रीयंत्र' कहा जाता है।

श्री वैभव लक्ष्मी व्रत में इनके जिन अष्ट स्वरूपों का विशेष रूप से ध्यान किया जाता है, वे इस प्रकार हैं—*धन लक्ष्मी, धान्य लक्ष्मी, ऐश्वर्य लक्ष्मी, अधि लक्ष्मी, विजय लक्ष्मी, गज लक्ष्मी, वीर लक्ष्मी व संतान लक्ष्मी।* इनके स्वर्गलक्ष्मी, महालक्ष्मी, गृहलक्ष्मी आदि स्वरूप विश्वव्यापी हैं। इनकी उपस्थिति सुख-समृद्धि व सम्पन्नता की द्योतक मानी जाती है।

CC-0. Prof. Madhavi Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. Prof. Madhav Lamichhane Digitization by eGangotri

आदिशक्ति महालक्ष्मी का पूजन सर्वप्रथम बैकुंठाधिपति श्री विष्णुजी (नारायण) ने किया था तत्पश्चात ब्रह्मा, शिव, इन्द्रादि समस्त देवों व ऋषि-मुनियों ने किया। ब्रह्माजी ने भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की अष्टमी से प्रारम्भ कर एक पाक्षिक (15 दिन) तक इनका पूजन किया था, तभी से संसार में लक्ष्मी पूजन की प्रथा का शुभारम्भ हुआ।

चैत्र मास में श्री विष्णुजी ने व पौष मास की संक्रांति को श्री मनु महाराज ने लक्ष्मीजी का विशेष पूजन किया था। अत: उपरोक्त तीनों महीनों (चैत्र,भादों व पौष) में लक्ष्मीजी की पूजा का विशेष महत्व है। कार्तिक मास (कातिक) की कृष्ण अमावस्या को इनकी पूजा का सर्वाधिक महत्व है और यह दिन दीपावली के नाम से विश्व भर में मनाया जाता है। इसी दिन ऋद्धि-सिद्धि के दाता श्री गणपति व श्री कुबेरजी का भी पूजन किया जाता है।

देवराज इन्द्र द्वारा भगवती लक्ष्मीजी का व्रत करने पर भगवान विष्णु ने उन्हें दैत्यराज बलि द्वारा सिंहासनच्युत किए जाने के भय से मुक्त किया।

इतना ही नहीं, युधिष्ठिर ने अपने खोए हुए राज्य को प्राप्त करने के लिए भगवती लक्ष्मी का व्रत किया था। दुर्योधन पर महालक्ष्मी की अपार कृपा थी। इसीलिए उसके हाथ से कभी कोष समाप्त नहीं होता—बल्कि उसकी वृद्धि ही होती थी।

उस काल से एक नहीं लाखों लोग **मां वैभव लक्ष्मी** का व्रत करके अपार धन-सम्पदा, सुख-समृद्धि व ऐश्वर्य प्राप्त कर चुके हैं, जिनमें से कुछ के विषय में पुस्तक के अंतिम पृष्ठों में बताया गया है। लेकिन इस बात को हमेशा ध्यान रखना चाहिए कि व्रत-अनुष्ठान में श्रद्धा-विश्वास की महत्वपूर्ण भूमिका है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वैभव लक्ष्मी व्रत का संकल्प व नियम

श्री वैभव लक्ष्मी व्रत करने से पूर्व संकल्प लिया जाता है। यह संकल्प आप किसी मंदिर में या अपने घर में मौजूद 'तुलसीजी' के पौधे के समक्ष ले सकते हैं। आप सच्चे मन से मां लक्ष्मी का स्मरण कर इस प्रकार कहें—'हे **मां वैभव लक्ष्मी!** आपकी जय हो ! हे मां ! मैं आपकी शरण में हूं। हर दर से निराश होकर मैं आपकी शरण में आई/आया हूं। मैं आपके...व्रतों का संकल्प लेता / लेती हूं, आप मेरी ...मनोकामना पूर्ण करें। **जय मां वैभव लक्ष्मी!**'

शास्त्रानुसार मां लक्ष्मी के व्रत के कुछ नियम इस प्रकार हैं

1. **मां वैभव लक्ष्मी** का व्रत किसी भी शुक्रवार से प्रारम्भ करना चाहिए।
2. संकल्प लेते समय 5, 11, 21, 31, 51 अथवा 101 व्रतों का संकल्प लिया जाता है। यदि संकल्प अवधि में मानी गई मनौती पूर्ण हो जाए तो भी संकल्प किए गए व्रत अवश्य करने चाहिए व अंतिम शुक्रवार को **मां वैभव लक्ष्मी** के व्रतों का उद्यापन करना चाहिए।
3. यदि संकल्प अवधि में मनोकामना पूर्ण न हो तो निराश न हों, पुन: संकल्प लेकर व्रत चालू रखें। इस अवधि में आपकी श्रद्धा-भक्ति व विश्वास में कमी नहीं आनी चाहिए।
4. उद्यापन में सात कन्याओं को भोजन कराने का विधान है।
5. व्रतों के संकल्प की अवधि में यदि नारी रजस्वला हो जाए तो उसे शुक्रवार को व्रत नहीं करना चाहिए। इस प्रकार संकल्प अवधि में जितने शुक्रवार छूट जाएं, उतने ही शुक्रवार आगे बढ़ा लेने चाहिए।
6. यह व्रत सुहागिनें, कुंवारी कन्याएं, पुरुष सभी रख सकते हैं। विष्णु सहित लक्ष्मी विवाहित है तो पति-पत्नी को मिलकर

Prof. Madhav Prasad Ghimire Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री धान्य लक्ष्मी

दुर्वासा के कोप से बिगड़ जात सब काज
अन्नपूर्णा बन रखी द्रुपद सुता की लाज
अन्न-धान्य, घृत-दूध से पूरित कर दो आज
धान्य लक्ष्मी शरण हूं, मम मस्तक पर साज!

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

श्री ऐश्वर्य लक्ष्मी

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

धन संपति दे विपद् हर, दो जग में सन्मान
मां लक्ष्मी ऐश्वर्य की, करूं तुम्हारा ध्यान
है मेरा क्या मातु, सब तुम्हरा ही है मान
कर किरपा, पद शरण दो, दो भक्ती का दान!

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

मां जग की आधार तुम, जग है तुझमें व्याप्त
वेद-शास्त्र सब कह रहे, कहते हैं यह आप्त
जो तुम्हरा सिमरन करे, करे तुम्हारा गान
पाए वह अमरत्व को, लगे न यम का बान!

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

काम क्रोध मद लोभ से न जाऊं मैं हार
विजयदायिनी मात तुम खोलो उर के द्वार
विष्णुप्रिये! सुखदायिनी! हो देवी अनुकूल
क्षमा करो, मैं मंदमति, हो जाए यदि भूल!

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

श्री गज लक्ष्मी

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

शुभ्र गजों से सोहती, है कमलासन वास
दुःख-क्लेशों का मूल से करती हो तुम नाश
राजयोग की दायिनी, करे जगत विश्वास
गज लक्ष्मी मां! शरण हूं, राखो मेरी आस!

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

चंड-मुंड को मार कर किया जगत उद्धार
वीर लक्ष्मी चंडिके मुझको भव से तार
करता हूं मैं वंदना शत-शत बारम्बार
उर का तम छंट जाए जो, कर ऐसा उजियार!

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

बांझन को भी पुत्र दे, करती तुम कल्यान
पुत्रन को सद्‌बुद्धि दे, देती तुम वर-दान
श्रद्धा ममता स्नेह का तुम साक्षात् स्वरूप
संतति अपनी को कभी लगन न दो दुख-धूप!

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कमला बेहद सुशील और संतोषी प्रवृत्ति की स्त्री थी। वह भगवान विष्णु की सच्ची भक्त थी। अपने पति सोहनलाल के साथ गांव में रहते उसने और उसके परिवार ने सदा दुख ही झेले थे। तब पति-पत्नी ने आपस में सलाह की और अपने बच्चों को लेकर एक बड़े शहर में आ गए। शहर में आकर सोहनलाल ने एक ढाबा खोल लिया था, जिससे अच्छी आमदनी होने लगी थी। यह सब श्री नारायणजी की कृपा का ही फल था जो कमला के आराध्य थे। सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा था, मगर कमला को एक ही दु:ख था कि ज्यों-ज्यों उसके घर में धन बढ़ता जा रहा था, त्यों-त्यों उसके पति की लालसा भी बढ़ती जा रही थी। उसने अपने कमाए धन को जुए, सट्टे और लॉटरियों में लगाना शुरू कर दिया था।

कमला अपने पति की लालची प्रवृत्ति से डरा करती थी। मौके बे मौके वह उसे समझाती भी थी मगर सोहन लाल पर उसके समझाने का कोई असर नहीं होता था। वह कहता—'तुम पागल हो कमला! अरे, इतने बड़े शहर में आकर भी अगर हमने कोठी-कार न बनाई तो धिक्कार है हमारे गांव छोड़ने पर।'

'जब ईश्वर की कृपा होगी, तो वह इसी काम में इतनी बरकत दे देगा कि हम यह सब भी बना और खरीद लेंगे।' कमला कहती।

'ईश्वर क्या कृपा करेगा? कर्मवीर अपने बल पर ही ये सब प्राप्त करते हैं।'

सोहनलाल अहंकार भरी बातें करता तो कमला मन मसोस कर रह जाती। सोहनलाल के कदम दिन-ब-दिन बहकते चले गए। उसे जब भी जुए, सट्टे या लॉटरी में नुकसान होता, वह शराब पी

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

लेता। इस प्रकार उसका ध्यान अपने धंधे की तरफ से भी हटता चला गया। जो ढाबा कल तक फायदे में चल रहा था, वह धीरे-धीरे नुकसान देने लगा। इसी गम में कभी-कभी सोहनलाल दिन में भी शराब पी लेता था, जिस कारण उसकी दुकान पर ग्राहकों का आना और भी कम हो गया। इस पर भी सोहनलाल को कोई समझ नहीं आई। वह बिक्री के पैसों से जुआ या लॉटरी खेल लेता और शराब पी लेता। घर में पैसा देना उसने बिल्कुल बंद कर दिया। कमला पैसों का जिक्र करती, तो वह काम मंदा होने का बहाना बना देता। ढाबे का सारा सामान एक दुकान से उधार आता था। जब दुकानदार को उसके जुए की लत और शराब पीने का पता चला तो उसने उधार देना बंद कर दिया। ढाबे के कारीगर भी पैसा न मिलने के कारण काम छोड़कर चले गए।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नतीजा यह हुआ कि ढाबे में ताला पड़ गया। अब तो घर में फाका होने लगा। अब सोहनलाल काम-धंधे की तलाश के नाम पर सुबह घर से निकल जाता और शाम को न जाने कहां से शराब पीकर लौट आता। घर में दोनों मासूम बच्चे और कमला भूख से बिलखते रहते।

कुछ दिन तो कमला अड़ोस-पड़ोस से मांगकर बच्चों का पेट किसी प्रकार भरती रही, मगर आज तो पड़ोसियों ने भी नजरें फेर लीं। आखिर कोई कब तक किसी पर दया कर सकता है?

रात होने पर बच्चे भूख से बिलख-बिलख कर सो गए। नशे में धुत्त सोहनलाल भी आकर सो गया और बेचारी कमला घर में बने मंदिर के सामने बैठी रात भर आंसू बहाती रही। उसका हृदय बार-बार कह रहा था—'हे नारायणजी! यह मुझे किस पाप की सजा दे रहे हैं आप? प्रभु! मेरे परिवार पर आए इस संकट को टालो। आज मेरे बच्चे भूख से बिलखते हुए ही सो गए हैं, मेरा पति पथभ्रष्ट हो चुका है। हे लक्ष्मीपति! रक्षा करो...मेरे पति को सद्‌बुद्धि दो।'

CC-0. Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

इसी प्रकार विनती करते वह कब सो गई, उसे स्वयं ही पता नहीं चला। सुबह जब उसकी आंख खुली तो देखा कि बच्चे सोए पड़े हैं, पति नहा-धो रहा था। कमला से उसकी नजरें मिलीं तो उसने सिर झुका लिया, फिर कपड़े पहनकर खामोशी से बाहर चला गया। कमला हाथ-मुंह धोकर फिर से अपने नारायणजी के मंदिर के सामने जा बैठी। चेहरा घुटनों पर टिका लिया और सोचने लगी कि क्या करूं? बच्चे उठकर नाश्ता मागेंगे तो क्या जवाब दूंगी? तभी दरवाजे पर दस्तक हुई। सहमी हुई सी वह दरवाजे तक पहुंची और दरवाजा खोला तो एक साधु को अपने सामने खड़ा पाया।

'कुछ भिक्षा दे बेटी।' साधु ने कहा।

'बाबा...मेरे घर में तो अन्न का एक दाना भी नहीं। पास में एक फूटी कौड़ी तक नहीं। आपको क्या दूं?' कहकर वह रो पड़ी।

'बेटी! तेरे घर में धन पड़ा है और तू दुखी है!' साधु ने कहा।

'धन? मेरे घर में? बाबा! आप क्यों मुझ अभागी का उपहास कर रहे हैं।'

'मैं सच कह रहा हूं बेटी। अपने घर की दीवार पर टंगी नारायणजी की तस्वीर के पीछे देख, वहां तेरा पुराना बटुआ (पर्स) पड़ा है, जिसमें कुछ धन है और सुन, यदि बच्चों को पिता से कुछ लेना हो तो उन्हें मां को मनाना चाहिए। मां स्वयं पिता को मना लेती है। यह ले...।' साधु ने अपने झोले में से एक पुस्तक निकालकर कहा—'यह **मां वैभव लक्ष्मी** व्रत कथा की पुस्तक है। तू मां लक्ष्मी की शरण में चली जा। मां तुझ पर अवश्य ही कृपा करेंगी और तेरा घर धन-धान्य से भर जाएगा।'

मां वैभव लक्ष्मी की पुस्तक हाथ में आते ही कमला के शरीर में जैसे नई शक्ति भर गई। वह बोली—'बाबा! क्या सचमुच **मां वैभव लक्ष्मी** मेरी दरिद्रता दूर कर देंगी?'

'बेटी! जहां **वैभव लक्ष्मी** की कृपा होती है, वहां दुख-दरिद्रता

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri
Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

ठहर नहीं पाती। तू पुस्तक में लिखी विधि के अनुसार मां का व्रत कर, तेरा उद्धार होगा। नारायण...नारायण...।'

कमला तो अपनी सारी सुध-बुध भूलकर पुस्तक के पृष्ठ पलटने लगी थी। अचानक उसके मन में आया कि यदि घर में धन है तो बाबा को खाली हाथ नहीं भेजना चाहिए। मैं अभी उन्हें कुछ देती हूं। ऐसा सोचकर जैसे ही उसने नजरें उठाईं तो अवाक् रह गई। अभी क्षण भर पहले ही तो साधु बाबा उसके सामने खड़े थे, मगर अब तो वहां दूर-दूर तक उनका पता ही नहीं था। मगर 'नारायण-नारायण' के शब्द अभी भी उसके कानों में गूंज रहे थे।

कमला हतप्रभ सी रह गई। तो क्या नारदजी मेरे नारायण का संदेश लेकर आए थे? जरूर यही बात है, सोचती हुई कमला तेजी से पलटकर भीतर आई और दीवार पर टंगी नारायणजी की तस्वीर के पीछे देखा तो सचमुच वहां उसका पुराना पर्स पड़ा था। कमला ने उसे खोलकर देखा तो उसमें सौ-सौ के पांच नोट रखे थे। खुशी के मारे उसका चेहरा दमकने लगा। एक नया उत्साह और फुर्ती आ गई उसके शरीर में। जल्दी-जल्दी उसने स्नान किया और पुस्तक पढ़ने बैठ गई। पुस्तक में सबसे पहले उसने व्रत के नियम पढ़े और यह पढ़कर तो उसकी खुशी का ठिकाना ही न रहा कि **मां वैभव लक्ष्मी** का व्रत शुक्रवार से आरम्भ किया जाता है। यह संयोग ही था कि उस दिन शुक्रवार ही था। उसने स्नानादि से निवृत्त होकर नारायणजी के सामने ही संकल्प लिया कि वह **मां वैभव लक्ष्मी** के इक्कीस व्रत करेगी। उसके बाद वह बाजार गई और खाने-पीने व पूजा का सामान लेकर आई।

उसने बच्चों को जगाकर उन्हें नहला-धुलाकर नाश्ता दिया और फिर **मां वैभव लक्ष्मी** व्रत कथा के पुस्तक में लिखे नियमों के अनुसार व्रत किया। सारा दिन वह '**जय मां वैभव लक्ष्मी-जय मां वैभव लक्ष्मी**' का जाप करती रही। शाम के समय उसने विधिवत् मां का पूजन किया और प्रार्थना की— हे मां! नारायणजी की आज्ञा

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

से मैंने आज से आपकी शरण ली है। मेरी मनौती पूर्ण करना मां। मैं केवल इतना चाहती हूं कि मेरे पति को सद्बुद्धि आए और वे सभी दुर्गुणों को त्यागकर फिर से सद्मार्ग पर चलते हुए अपना काम करें। **जय मां वैभव लक्ष्मी, जय मां वैभव लक्ष्मी!**'

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व्रत कथा कहकर उसने बच्चों को चूरमा का प्रसाद दिया। अपने अड़ोस-पड़ोस में बांटा, फिर पति के इंतजार में पलकें बिछाकर बैठ गई। रात आठ बजे उसका पति आया। कमला को यह देखकर सुखद आश्चर्य हुआ कि आज वह नशे में नहीं था।

'कमला! आज तो चमत्कार हो गया। ईश्वर की कृपा से कल से ही मेरा ढाबा फिर से चालू हो जाएगा। आज लाला ने स्वयं बुलाकर कहा कि यदि मैं शराब और जुए की लत छोड़ दूं तो वह मुझे फिर से आटा-दाल आदि उधार दे देगा और कमला मैंने आज से ही कसम खा ली है कि मैं जीवन में कभी भी शराब और जुए की तरफ नहीं देखूंगा। ये सब तुम्हारे शुभ कर्मों का चमत्कार है!'

'नहीं स्वामी! यह सब **मां वैभव लक्ष्मी** का चमत्कार है।'

'**मां वैभव लक्ष्मी** का चमत्कार?'

'हां स्वामी! अब हम सब **मां वैभव लक्ष्मी** की शरण में हैं। आज ही मैंने **मां वैभव लक्ष्मी** का व्रत रखा है। **मां वैभव लक्ष्मी** सबकी मनोकामनाएं पूर्ण करती हैं। एक बार मां जिससे प्रसन्न हो जाती हैं, उसके जीवन में कभी भी दुख और दरिद्रता की छाया नहीं पड़ती।'

'मगर तुम्हें यह सब बताया किसने? मेरा मन रोमांचित सा हो रहा है कमला। मुझे सब कुछ बताओ!'

'आओ स्वामी...आओ...आप भी पहले मां का आशीर्वाद ले लें!' कमला उसे मंदिर के समीप ले गई। एक चौकी पर श्रीयंत्र के समक्ष **मां वैभव लक्ष्मी** की जोत अभी भी जल रही थी और जल के पात्र पर रखी कटोरी में घर का आखिरी गहना कमला की नाक की सोने की कील पड़ी थी। सोहनलाल जैसे ही माता की जोत के

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri
समक्ष गया, उसकी आंखों से अविरल अश्रुधारा बह निकली और हाथ जोड़कर वह बोला—'हे **मां वैभव लक्ष्मी**! मैं लोभ में फंसकर पथभ्रष्ट हो गया था। मैं बिना मेहनत किए ढेर सारी दौलत पा लेना चाहता था, मैं समझ गया मां कि आपने मुझे मेरे लालच का ही दण्ड दिया था। हे मां! अब मैं अपने परिवार सहित आपकी शरण में हूं...हमारा उद्धार करो। हे मां! मैं भी आज संकल्प करता हूं कि अपनी पत्नी के साथ आपके व्रत को करूंगा।'

फिर दोनों ने मिलकर **मां वैभव लक्ष्मी** का प्रसाद ग्रहण किया। दूसरे दिन सोहनलाल ने अपनी दुकान को झाड़-पोंछकर साफ किया ही था कि उसके पुराने कारीगर भी वापस आ गए और दोपहर होते-होते ढाबा पहले की भांति चलने लगा। इसके बाद जब शुक्रवार आया तो पति-पत्नी ने मिलकर **मां वैभव लक्ष्मी** का व्रत किया। इस एक सप्ताह में सोहनलाल के घर की स्थिति तेजी से सुधरने लगी। अब सोहनलाल ने लोभ-लालच सब त्यागकर सब कुछ मां की मर्जी पर छोड़ दिया था। इसी प्रकार इक्कीसवां शुक्रवार आया तो दोनों ने अपने सगे-संबंधियों को बुलाकर कथा कही। सात कन्याओं का पूजन कर उन्हें भोजन कराया और उन्हें **वैभव लक्ष्मी** व्रत कथा की एक-एक पुस्तक भेंट की। इसके अतिरिक्त उन्होंने १०१ प्रतियां सभी श्रद्धालु भक्तों में बांटीं। उसी दिन उन्होंने यह संकल्प भी लिया कि हम उम्र भर निष्काम भाव से **मां वैभव लक्ष्मी** का व्रत करते रहेंगे।

बोलो, **मां वैभव लक्ष्मी** की जय!

कथा के बाद मां से इस प्रकार प्रार्थना करनी चाहिए—'हे मां जिस प्रकार आपने कमला के मन की मुराद पूरी की ऐसे ही अपने सभी भक्तों की मुरादें पूरी करना। अपनी शरण में आए की रक्षा करना। सबको सुख-समृद्धि, धन-धान्य और संतान देना।'

नोट : प्रार्थना के उपरान्त नीचे दिए गए श्लोक का उच्चारण करते हुए ध्यान और बाद में लक्ष्मी चालीसा का पाठ अवश्य करें।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

ध्यान

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

या रक्ताम्बुजवासिनी विलसिनी चण्डांशु तेजस्विनी।
या रक्ता रुधिराम्बरा हरिसखी या श्री मनोह्लादिनी॥
या रत्नाकरमन्थनात्प्रगटिता विष्णोश्च या गेहिनी।
सा मां पातु मनोरमा भगवती लक्ष्मीश्च पद्मावती॥

भावार्थ— जो लाल कमल पर विराजमान हैं, जिनकी कान्ति अतुलनीय है, महान तेज वाली, जो समस्त रक्तवर्णा (लालवर्ण) हैं, जो लाल वस्त्र धारण किए हुए हैं, भगवान विष्णु की अर्धांगिनी, सबके हृदय को आनन्द देने वाली, समुद्र मंथन के समय सागर से प्रगट होने वाली, भगवान विष्णु की परमप्रिया, अतिशय पूजनीय हैं, वे मां लक्ष्मी मेरी रक्षा करें।

क्षमा मंत्र

स्तुति के उपरान्त पूजन में किसी भी प्रकार की त्रुटि रह जाने के लिए निम्न मंत्र द्वारा क्षमा याचना करें :—

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वरि!

'हे मां! हे परमेश्वरी! मैं आवाहन की विधि नहीं जानता, विसर्जन की विधि भी नहीं जानता, न ही पूजा आदि करना जानता हूं, अतः हे मां! यदि मेरी पूजा-अर्चना, आवाहन या विसर्जनादि में कोई त्रुटि रह गई हो, तो मुझे क्षमा करें।'

मां के निवास स्थल

मां वैभव लक्ष्मी किसी पर्वत, सागर या कन्दराओं आदि में नहीं रहतीं, मां के निवास के कुछ निश्चित स्थान हैं, जो मां द्वारा इस प्रकार वर्णित हैं :—

'जहां अतिथि सत्कार होता हो, सज्जनों की सेवा हो, धर्मकार्य हों, प्रेम हो, सत्य का आचरण हो, जहां संतोषी स्त्री और विनयी व कर्मशील पुरुष रहते हों, उन स्थानों का मैं कभी परित्याग नहीं करती।'

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

मां वैभव लक्ष्मी व्रत कथा के चमत्कार

मां वैभव लक्ष्मी व्रत कथा के यूं तो लाखों-लाख चमत्कार हमें देखने-सुनने को मिलते हैं, किन्तु कुछ भक्तों पर माता की इतनी तीव्र अनुकम्पा हुई है कि उससे प्रभावित होकर हम भी भक्तों के विश्वास की दृढ़ता एवं श्रद्धा की जाग्रति हेतु इन घटनाओं को प्रकाशित कर रहे हैं—

लॉटरी निकल आई

मेरे घर में धन का घोर अभाव था। पति एक सेल्समैन का स्कूटर चलाते थे और दो हजार तनख्वाह मिलती थी। मैं रोज मां लक्ष्मी की पूजा करती और प्रार्थना करती कि मां कृपा करो। मगर कुछ नहीं हुआ।

मैं गुम-सुम रहती थी, मगर अचानक एक दिन दिवाली से तीन दिन पहले की बात है, गली में एक बुढ़िया आई, वह धार्मिक किताबें बेच रही थी। मुझसे बोली—'बेटी किताब ले ले।'

वह **मां वैभव लक्ष्मी** व्रत कथा की किताब थी, इसलिए मना करते न बना और किताब लेकर मैं पढ़ने बैठ गई। किताब पढ़ते ही मन में आया कि क्यों न मैं भी मां के व्रत करूं, शायद इससे ही मां लक्ष्मी खुश हो जाए। दूसरे दिन शुक्रवार था। मैंने संकल्प कर लिया कि पांच व्रत करूंगी। संकल्प करके मैं काम में लग गई। दूसरे दिन मैंने पुस्तक में बताई विधि के अनुसार व्रत किया। शाम को पति आए तो बड़े खुश दिखाई दिए। मैंने पूछा, 'क्या बात है? बड़े खुश दिखाई दे रहे हो?'

उन्होंने बताया कि सेठ ने सेल्समैन को हटाकर मुझे उसकी जगह

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

उसका नाम ही गरीबदास नहीं था, वह भाग्य से भी गरीब ही था। किसी समय वह बम्बई की कपड़ा मिल में काम करता था, मगर जैसे-जैसे देश में कपड़ा बुनने की नई-नई तकनीकें आती गईं, वैसे-वैसे उसके दुर्दिन भी निकट आते गए। पुरानी मिलें बंद हो गईं। नई मशीनों के लिए नई उम्र के कारीगर आ गए और गरीबदास बेरोजगार हो गया। बम्बई का किराए का मकान छोड़कर वह नासिक चला गया और नौकरी के लिए दर-दर की ठोकरें खाने लगा। गरीबदास के परिवार में पत्नी, तीन बेटियां और एक बेटा था। वे भी उसकी बदनसीबी की मार झेल रहे थे। घर में न ढंग का पहनने को था, न खाने को।

गरीबदास कहीं मजदूरी करता तो एकाध दिन घर में चूल्हा जल जाता। वह अपनी दशा पर भीतर ही भीतर रोता था।

एक दिन! अचानक मजदूरी का काम भी बंद हो गया। घर लौटते समय गरीबदास बेहद उदास था। कल की चिंता उसे खाए जा रही थी। उसने सोचा कि क्यों न कल के लिए आज ही काम की तलाश करूं। यही सोचकर वह एक नई बन रही कॉलोनी में चला गया। वह एक घर के आगे से गुजर रहा था, उसने देखा कि एक व्यक्ति प्रसाद बांट रहा है। उसकी पत्नी प्रसाद ग्रहण करने वाले प्रत्येक व्यक्ति को एक-एक पुस्तक दे रही थी। उत्सुकतावश वह भी उधर बढ़ा। उसे भी प्रसाद के साथ एक पुस्तक मिली। वह **मां वैभव लक्ष्मी** व्रत कथा की पुस्तक थी। गरीबदास ने वहीं एक पेड़ के नीचे बैठकर वह पुस्तक पढ़ी तो मां के चमत्कार पढ़कर वह दंग रह गया। फिर मन ही मन उसने प्रण किया कि अगर मां लक्ष्मी चाहेंगी, तो मैं भी व्रत करूंगा। फिर उसने प्रसाद बांटने वाले से जाकर बात चीत की तो उसने बताया कि मां की कृपा से

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Digitized by eGangotri

उन्होंने वह कोठी बनाई है और मुहूर्त्त के साथ मां का उद्यापन भी किया था।
CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

अब तो गरीबदास ने स्वयं में एक अनोखा-सा आत्मविश्वास महसूस किया। अब वह सीधा घर की ओर चल दिया।

घर पहुंचकर उसने पत्नी और बच्चों सहित बांटकर प्रसाद खाया, फिर अपनी पत्नी को **मां वैभव लक्ष्मी** व्रत की महिमा बताने लगा। तत्पश्चात् उसने व्रत के नियमादि पढ़े और अपनी पत्नी को बताए। उसी क्षण दोनों ने निर्णय कर लिया कि वे भी **मां वैभव लक्ष्मी** का व्रत करेंगे। ऐसा प्रण करते ही उनके घर में अजीब-सी खुशी छा गई।

दूसरे दिन सुबह-सुबह स्नानादि से निवृत्त होकर पति-पत्नी मंदिर गए और वहां विधिवत् **मां वैभव लक्ष्मी** के व्रतों का संकल्प लिया। फिर दोनों ने मिलकर व्रत आरम्भ कर दिए।

अभी पांच हफ्ते भी नहीं गुजरे थे कि गरीबदास को एक ऐसा व्यक्ति मिला, जिसकी कई खड्डियां थीं, मगर संभालने वाला वह अकेला ही था। जब गरीबदास ने उसे बताया कि पूर्व में वह एक मिल में सुपरवाइजर रह चुका है तो उस व्यक्ति ने तुरन्त उसे अच्छी तनख्वाह पर अपने पास रख लिया। गरीबदास की देख-रेख में खूब माल बना और मालिक उसके काम से इतना प्रभावित हुआ कि उसने उसे अपना पार्टनर ही बना लिया। इस प्रकार कुछ ही दिनों में गरीबदास पर मां की ऐसी कृपा हुई कि व्यापार दिन-दूनी और रात चौगुनी तरक्की करने लगा। कल के खाकपति गरीबदास का ऐसा भाग्य चमका कि देखते ही देखते लाखों में खेलने लगा। तब पति-पत्नी ने अपने सभी सगे-संबंधियों व मित्रों को बुलाकर संकल्प के अंतिम शुक्रवार को मां का उद्यापन किया। इक्कीस कन्याओं को भोजन कराया और **मां वैभव लक्ष्मी** व्रत कथा की पुस्तकें बांटी।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बेरोजगार बेटा

ब्रजकिशोर अपने माता-पिता की इकलौती संतान था। जैसे-तैसे उसके पिता सीताराम ने उसे एम.ए. तक की शिक्षा दिलवाई। पढ़-लिखकर जब ब्रजकिशोर ने नौकरी पाने के लिए हाथ-पैर मारने शुरू किए तो निराशा के सिवा कुछ भी हाथ न लगा। प्राइवेट नौकरी करने का वह इच्छुक नहीं था और सरकारी नौकरी के लिए रिश्वत की जरूरत थी।

लगातार मिलने वाली असफलताओं ने ब्रजकिशोर के मां-बाप को तोड़कर रख दिया। उसके पिता सीताराम एक कम्पनी में मामूली क्लर्क थे। ब्रजकिशोर की मां अनपढ़ मगर धार्मिक विचारों की थी। वह घंटों मंदिर में बैठी भगवान से ब्रजकिशोर की नौकरी की फरियाद करती रहती थी।

एक दिन ब्रजकिशोर की मां मंदिर में बैठी थी कि पुजारी बाबा ने उसे टोक दिया—'माई! तुम घंटों भगवान की मूर्ति के सामने बैठी भगवान को शिकायत भरी नजरों से देखती रहती हो, क्या तुम्हें भगवान से कोई शिकायत है?'

'क्या बताऊं पुजारी जी, मैं बड़ी दुःखी हूं। मेरे बेटे की कहीं नौकरी नहीं लग रही। जहां भी जाता है, वहीं रिश्वत मांगी जाती है। योग्यता की कोई कद्र ही नहीं है।'

'ऐसी बात नहीं है माई! योग्य और ईमानदार की कद्र भले ही देर से हो, मगर होती जरूर है। तुम अपने पुत्र से कहो कि वह **मां वैभव लक्ष्मी** के इक्कीस व्रत करे। उस पर लक्ष्मी-नारायण की कृपा अवश्य होगी और अपनी योग्यता के बल पर ही वह एक दिन ऊंची नौकरी पाएगा।'

'तुम अपने पुत्र को मेरे पास भेजना, मैं उसे सब समझा दूंगा और व्रत कथा भी सुनाऊंगा। मैं तुम्हें देखना कि उसके व्रत

Prof. Madhav Prasad Ramtirtha Collection. Kanpur Vishwavidyalaya, Nainital

करने का संकल्प लेते ही तुम्हारे घर में रोशनी होनी शुरू हो जाएगी।'

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

'अगर ऐसी बात है तो मैं उसे आज शाम को ही लेकर आऊंगी, महाराज!'

रात ब्रजकिशोर के घर लौटते ही वे उसे मंदिर लेकर पहुंचीं और पुजारी जी ने उसे **मां वैभव लक्ष्मी** के व्रत कथा की महिमा बताकर, व्रत करने की विधि बताई तथा एक पुस्तक देकर वहीं श्री लक्ष्मी-नारायणजी की पावन मूर्ति के सामने ही उससे व्रतों का संकल्प करा दिया। तत्पश्चात् आगामी शुक्रवार से ही ब्रजकिशोर ने विधिवत् **मां वैभव लक्ष्मी** (श्रीयंत्र) का पूजन किया और शाम को व्रत कथा पढ़ी।

अभी ग्यारह शुक्रवार भी पूरे नहीं हो पाए थे कि उसके पास एक सरकारी विभाग का इंटरव्यू लेटर आ गया। **मां वैभव लक्ष्मी** की कृपा से वह लिखित परीक्षा में पास हो गया। अब केवल इन्टरव्यू होना बाकी था। उसमें यदि वह सलेक्ट हो जाता तो बारह हजार की तनख्वाह वाली नौकरी उसके लिए तैयार थी।

ब्रजकिशोर को पूरा विश्वास था कि उसकी योग्यता और **मां वैभव लक्ष्मी** की कृपा से उसे यह नौकरी अवश्य ही मिलेगी।

दस दिन बाद ब्रजकिशोर ने लिखित परीक्षा दी, जिसमें वह पास हो गया और अगले पन्द्रह दिनों में उसका नियुक्ति पत्र भी उसे मिल गया। इस प्रकार इक्कीस व्रत होने से पहले ही **मां वैभव लक्ष्मी** ने उसकी झोली भर दी। उसे पोस्ट एंड टेलीग्राफ ऑफिस में मनचाही नौकरी मिल गई।

इसके बाद इक्कीस शुक्रवार पूरे होते ही ब्रजकिशोर ने उद्यापन किया और **मां वैभव लक्ष्मी** व्रत कथा की ५१ पुस्तकें बांटीं।

जय मां वैभव लक्ष्मी...जय मां वैभव लक्ष्मी!

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

राधा की शादी को आठ साल बीत चुके थे, मगर उसके अब तक कोई संतान नहीं हो पाई थी। राधा का पति रामप्रकाश आढ़ती था। घर धन-धान्य से भरा हुआ था, मगर पति-पत्नी के चेहरों पर खुशी की झलक तक दिखाई नहीं देती थी। राधा के सास-ससुर पोते का मुख देखने की चाह लिए इस संसार से विदा हो चुके थे।

रामप्रकाश ने बड़े-बड़े डॉक्टरों से राधा का चेकअप कराया मगर कोई लाभ न हुआ। थक-हारकर उन्होंने पीर-फकीर और साधु-महात्माओं की शरण ली, कोई तीर्थ, कोई मंदिर-मस्जिद नहीं छोड़ा, मगर हाथ कुछ नहीं लगा। जब कहीं से कुछ लाभ न हुआ तो पति-पत्नी इसे ही अपना मुकद्दर मानकर और निराश होकर बैठ गए।

एक दिन राधा गुमसुम-सी बैठी थी कि तभी उसकी एक सहेली का उसके घर आगमन हुआ। राधा ने अपनी चिन्ता छिपाकर उसका स्वागत किया। उसके दो बच्चे भी थे, जो उसके साथ आए थे। राधा ने बच्चों को गोद में भर लिया और इस प्रकार प्यार करने लगी मानो वे उसी के बच्चे हों। खा-पीकर बच्चे खेलने लगे तो दोनों सहेलियां आपस में बतियाने बैठ गईं। राधा ने कहा—'ऊषा! तेरे बच्चे बहुत प्यारे हैं।'

'राधा! सच पूछे तो आज मैं तेरे लिए एक सौगात लाई हूं।'

'क्या?'

'राधा! मैं भी तेरी तरह नि:संतान थी, मगर कलकत्ता जाकर मुझे एक ऐसा अमोघ अस्त्र मिला, जिसकी वजह से मेरी गोद भरी।'

'कैसे? क्या वहां किसी डॉक्टर को दिखाया?'

'नहीं, मां वैभव लक्ष्मी की कृपा हुई है मुझ पर।'

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

'ये कौन-सी मां हैं ऊषा?'

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

तब ऊषा ने उसे विस्तार से **मां वैभव लक्ष्मी** के विषय में बताया। राधा बोली—'तब तो मैं भी उनके व्रत अवश्य करूंगी ऊषा!'

'तो यह लो। यह है **मां वैभव लक्ष्मी** व्रत कथा की पुस्तक। मैं अपने साथ लेकर आई थी।'

राधा ने लपककर वह किताब ली और माथे से लगाकर बोली—'मैं **मां वैभव लक्ष्मी** के इक्यावन व्रत करूंगी ऊषा।'

'मां तुम्हारी मनोकामना अवश्य ही पूरी करेंगी।'

और फिर इक्यावन व्रत पूरे होते-होते राधा ने एक सुन्दर कन्या को जन्म दिया। तत्पश्चात् व्रत पूरे होने पर उन्होंने **मां वैभव लक्ष्मी** का उद्यापन किया और १०१ पुस्तकें **मां वैभव लक्ष्मी** व्रत कथा की बांटीं। **जय मां वैभव लक्ष्मी...जय मां संतान लक्ष्मी!**

बंधा कारोबार चल निकला

मंगतराम का मेरठ में हैण्डलूम का कारोबार था। अचानक सप्लाई रुक गई। कारीगरों ने काम रोक दिया। एकाएक ऐसे कैसे हो गया, सेठजी को समझ नहीं आया। व्यापार संबंधी कहीं कोई भूल हुई हो, ऐसा भी नहीं था। सेठानी के मुंह से जब उनकी पड़ोसन को इस बात का पता चला, तो उसने एक योग्य तांत्रिक से मिलने की सलाह दी। तांत्रिक ने पुष्टि की, 'सेठानीजी, तुम्हारे किसी बहुत अपने ने कारोबार बांधा है।' सेठानी समझ गई। पर ऐसा रिश्ता था कि कुछ बोलने का अर्थ था घर में विवाद।

'मां वैभव लक्ष्मी के व्रत रखो। किसी को बिना हानि पहुंचाए, सब अनुकूल हो जाएगा।' तांत्रिक ने सलाह दी।

सेठानी ने विधि जानकर व्रत रखना शुरू किया। धीरे-धीरे सभी परेशानियां समाप्त हो गईं। कारोबार चल निकला।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रमिला देवी के पति सोने के गहने का काम करते थे। दुकानदार उन्हें सोना देते, जिसके गहने गढ़कर वे उन्हें लौटा देते और मजदूरी ले लेते थे। एक दिन एक सुनार ने उन्हें कुछ हीरे दिए, जिन्हें गहने में जड़ना था। उन्होंने वे हीरे प्रमिला को दे दिए। प्रमिला ने उन्हें भी लापरवाही से बेडरूम की अलमारी में डाल दिया।

तीसरे दिन जब उसके पति को हीरों की जरूरत पड़ी तो हीरे वहां से गायब थे। उसके पति के हाथ-पांव फूल गए। दो लाख के हीरे थे। पूरा घर छान मारा मगर हीरे न मिले। पुलिस में खबर की गई, मगर कोई लाभ न हुआ। प्रमिला अपने आपको कुसूरवार ठहरा रही थी। उसी की लापरवाही से हीरे खोए थे। इस घटना से उसके पति की मार्किट में साख गिर गई और काम ठप हो गया। अब प्रमिला को एक औरत ने सलाह दी कि वह **मां वैभव लक्ष्मी** का व्रत करे। प्रमिला ने उसी दिन बाजार से **मां वैभव लक्ष्मी** व्रत कथा की पुस्तक खरीदी और ग्यारह व्रत करने और २१ पुस्तकें बांटने का संकल्प लिया। उसी रात सोते हुए स्वप्न आया कि अलमारी के पीछे चूहे का बिल है, जिसमें हीरों की पोटली पड़ी है। सुबह उठते ही उसने अपने पति को यह बात बताई। तभी दोनों ने मिलकर अलमारी हटाई तो उनकी खुंशी का ठिकाना न रहा। चूहे के बिल में पड़े हीरे जगमगा रहे थे और शनील का वह कपड़ा, जिसमें हीरे थे, उसे चूहे ने कुतर-कुतर कर खा लिया था।

इस प्रकार किसी का बच्चा गुम हो गया था, मां ने अपनी शरण में आने पर उन दम्पति को भी स्वप्न में बच्चे को एक स्थान पर खेलते दिखाया, वहां जाकर उन दम्पति ने उसे पा लिया।

जय मां वैभव लक्ष्मी।

Prof. Madhavi Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

पुत्र रत्न की प्राप्ति

सेठ रतनचंद शाह के छः पुत्रियां हुईं। वे हर पल एक पुत्र की कामना करते रहते थे। खूब दान करते, तीर्थयात्राएं करते। कोई मंदिर-मस्जिद नहीं छोड़ी, उनकी इच्छा पूर्ण न हुई। तब एक साधु ने कहा कि **मां वैभव लक्ष्मी** की शरण में जाओ।

सेठजी ने साधु महाराज की सेवा-सुश्रूषा करके उनसे सारा वृत्तांत पूछा तो उन्होंने उन्हें **मां वैभव लक्ष्मी** का व्रत करने का आदेश दिया। सेठ-सेठानी दोनों ने मिलकर व्रत किया और नौ माह बाद ही उनके घर दो जुड़वां पुत्र हुए। दो-दो रत्न पाकर सेठ रतन शाह की खुशी का ठिकाना न रहा। बच्चों के मुख देखकर वे खुशी के मारे रो पड़े और उसी दिन से **मां वैभव लक्ष्मी** के अनन्य भक्त हो गए। व्रत अवधि पूर्ण होने पर उन्होंने उद्यापन करके १०१ पुस्तकें मां के भक्तों में बांटीं।

पलक झपकते प्रोमोशन मिला

गाजियाबाद के लिपिक श्याम सुंदर पांच वर्षों से प्रोमोशन के लिए परेशान थे। उन्होंने **मां वैभव लक्ष्मी** के व्रत किए और प्रोन्नति करते-करते ऊंचे पद पर जा पहुंचे।

जाम हुई दुकान चल निकली

सूरत में चमन भाई की दुकान जाम पड़ी थी। ग्राहक उनकी दुकान की तरफ देखना भी गवारा नहीं करते थे। एक साधु ने उन्हें **मां वैभव लक्ष्मी** व्रत की सलाह दी और उनकी कृपा से आज उनकी चार दुकानें हैं।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

घर में हुआ शान्ति

चमनलाल के छः पुत्र थे। छहों भाई छः दिशाओं की तरह थे। घर में कलह होती रहती थी। बहुएं एक-दूसरे की चुगली करती थीं। सास-ससुर को कुछ समझती ही नहीं थीं। इस क्लेश से तंग आकर चमनलाल ने पत्नी के साथ घर छोड़ दिया और हरिद्वार जाकर रहने लगे। वहां उन्हें एक स्त्री मिली, जिसने कलह शान्ति के लिए **मां वैभव लक्ष्मी** व्रत करने की सलाह दी।

दोनों पति-पत्नी ने मिलकर इक्कीस व्रतों का संकल्प लिया और पूरी श्रद्धा से व्रत किए। बीसवें शुक्रवार को पति-पत्नी यह देखकर आश्चर्यचकित रह गए कि उनके छहों बेटे और बहुएं उन्हें वापस लेने हरिद्वार आ पहुंचे थे। उन्होंने बताया कि एक रात उन सभी को स्वप्न दिखाई दिया और एक वृद्धा ने सबको फटकार लगाकर कहा कि यदि मिलकर प्रेम से नहीं रहोगे तो दर-दर का भिखारी बना दूंगी। बस, तभी उन्हें वास्तविकता का बोध हुआ कि आखिर इन झगड़ों और कलह का क्या फायदा? बस, हमें अपनी गलतियों का एहसास हो गया।

तत्पश्चात् सभी बेटे बड़े सम्मान से माता-पिता को घर लेकर आए। चमनलाल दिल्ली में आज अपने परिवार के साथ सुख का जीवन बिता रहे हैं।

खोया बेटा मिला

मालती धार्मिक विचारों की महिला थी। उसके परिवार में पति के अतिरिक्त दो जुड़वां पुत्र थे, महेश और दिनेश। दोनों की उम्र दस वर्ष थी। एक बार गढ़ मुक्तेश्वर के मेले में उसका एक बेटा दिनेश उनसे बिछुड़ गया। अखबारों में इश्तहार दिए गए, टी.वी. पर तस्वीरें प्रसारित करवाई गईं, मगर कहीं पता न चला।

Prof. Madhav Prasad Tamrakar Collection. Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

मंदिरों, दरगाहों पर नाक रगड़ते, ज्योतिषों, तांत्रिकों के पास धक्के खाते कि कहीं कोई खोज-खबर मिल जाए, लेकिन सब बेकार गया। पति-पत्नी थक कर बैठ गए। मालती बीमार रहने लगी।

एक दिन मालती की पड़ोसन की एक रिश्तेदार दुर्गा देवी आई हुई थी। उसकी मालती से भी बोल-चाल थी। जब उसे मालती का बच्चा गुम होने की बात पता चली तो वह उसके पास सहानुभूति जताने आई और मालती की हालत देखकर वह बोली—'मालती बहन! तुम चिन्ता न करो। मुझे विश्वास है कि तुम्हारा बेटा तुम्हें अवश्य ही मिल जाएगा।'

'कहां से मिल जाएगा बहन! हम तो उसकी आस ही छोड़ चुके हैं। क्या-क्या जतन नहीं किए उसे खोजने के लिए। देवी-देवताओं से मन्नतें मांगी, पीर-पैगम्बरों के पैर पूजे, मगर कोई लाभ न हुआ। पता नहीं वह जिंदा भी है या नहीं।' कहकर मालती रोने लगी।

'मालती बहन!' दुर्गा बोली—'इतना सब कुछ तुमने अपने मन से किया, अब एक काम मेरे कहे करो। मैं विश्वास से कहती हूं कि तुम्हारा बेटा तुम्हें अवश्य ही मिल जाएगा। बल्कि मुझे तो यह दृढ़ विश्वास है कि तुमने पूरी श्रद्धा और विश्वास से मेरी बात मानी तो **मां वैभव लक्ष्मी** की कृपा से घर बैठे ही तुम्हारा बेटा तुम्हें मिल जाएगा।'

'**मां वैभव लक्ष्मी**!' चौंककर मालती उसका चेहरा देखने लगी।

'हां बहन, तुम मन्नत मांगकर **मां वैभव लक्ष्मी** के व्रत करो। कलियुग में **मां वैभव लक्ष्मी** ही हैं जो अपनी शरण में आने वाले को हर प्रकार के संकटों से मुक्त कर देती हैं।' दुर्गा बताती रही—'तुम आज ही बाजार से **मां वैभव लक्ष्मी** व्रत कथा की पुस्तक ले

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri
आओ और उसमें लिखे नियमों के अनुसार संकल्प लेकर **मां वैभव लक्ष्मी** के व्रत करो। मुझे पूरा विश्वास है कि तुम्हें तुम्हारा खोया बेटा अवश्य ही मिल जाएगा।'

'ठीक है, मैं आज ही वैभव लक्ष्मी व्रत कथा की पुस्तक लाकर कल से ही व्रत शुरू कर दूंगी।' मालती की आंखों में आशा की चमक उभर आई।

'कल से नहीं, मां वैभव लक्ष्मी के व्रत शुक्रवार के दिन किए जाते हैं, आज मंगलवार है। हां, तुम आज संकल्प ले सकती हो। संकल्प आदि कैसे लें, यह सब पुस्तक में लिखा है। पूरी श्रद्धा रखो मां पर। जैसी श्रद्धा और विश्वास होगा, मां वैसा ही फल देगी।'

तत्पश्चात, दुर्गा के जाने के बाद मालती तुरन्त ही बाजार गई और **वैभव लक्ष्मी** व्रत कथा की पुस्तक ले आई। घर लौटकर उसने सबसे पहले पुस्तक में नियमादि पढ़ें, फिर मां की चमत्कारों की कथाएं पढ़कर तो वह आत्मविभोर हो उठी। मां की कृपा भरी कहानियां पढ़कर उसका मन भर आया और आनन्द के मारे आंखों से आंसू बहने लगे।

उसने उसी दिन ठाकुर जी के मंदिर में जाकर पुजारी बाबा के निर्देशानुसार **मां वैभव लक्ष्मी** के इक्कीस व्रतों का संकल्प लिया और घर आकर तीव्रता से शुक्रवार आने की प्रतीक्षा करने लगी। व्रतों का संकल्प लेते ही उसका मन हल्का हो गया, चिंता मिट गई और उसे पूर्ण विश्वास हो गया कि **मां वैभव लक्ष्मी** की कृपा से उसे उसका खोया पुत्र अवश्य ही मिल जाएगा। वह सारा दिन '**जय मां वैभव लक्ष्मी, जय मां वैभव लक्ष्मी**' का जाप करती रही। शाम को जब उसका पति घर लौटा तो आज उसने मालती को बिल्कुल ही बदला हुआ पाया। अब न तो वह बीमार दिख रही थी और न ही ग़मगीन, वैसी वह रोज दिखती थी।

Prof. Madhavi Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

बालकिशन ने इस बदलाव का कारण पूछा तो मालती ने उसे विस्तार से मां वैभव लक्ष्मी के विषय में बताया। तब बालकिशन ने भी उसके साथ व्रत रखने की इच्छा जाहिर की और दूसरे ही दिन मंदिर में जाकर उसने भी व्रतों का संकल्प लिया।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शुक्रवार को दोनों ने व्रत रखा और मां के चरणों में अपनी विनती रखी।

सात शुक्रवार बीते थे कि एक दिन पुलिस की गाड़ी उनके दरवाजे पर आकर रुकी।

बालकिशन ने बाहर आकर देखा तो पुलिस के साथ अपने खोए बेटे को देखकर चौंक पड़ा। बच्चा अपने पिता को देखकर उससे लिपट गया और रोने लगा। आवाज सुनकर मालती भी बाहर आई और अपने बेटे को देखकर खुशी से चीख उठी—'**जय मां वैभव लक्ष्मी!**' फिर उसने दिनेश को अपने सीने से चिपटा लिया और खुशी के मारे बावली सी रोने लगी।

तब बालकिशन ने पुलिस वालों से बातचीत की तो पता चला कि बच्चों से भीख मंगवाने वाला एक गिरोह उसे उठा ले गया था। पिछले हफ्ते ही गिरोह का भण्डाफोड़ हुआ है और दिनेश सहित पुलिस ने दस बच्चे बरामद किए हैं। जिन बच्चों को उनके एड्रेस पता थे, उन्हें पुलिस अपने संरक्षण में उनके घर पहुंचा रही है। इस प्रकार पुलिस ने बालकिशन से बच्चे की सपुर्दगी के कागजातों पर हस्ताक्षर कराए और वापस लौट गई।

अब तो उनके घर में ही नहीं, बल्कि पूरे मोहल्ले में ही हर्ष की लहर दौड़ गई।

जय मां वैभव लक्ष्मी! जय मां संतान लक्ष्मी!

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

मुकदमे में जीत

विजय कुमार पर अपनी कम्पनी में गबन का इल्जाम लग गया। मालिकों ने उन्हें न केवल नौकरी से निकाला, बल्कि मुकदमा भी कर दिया। विजय कुमार बेहद ईमानदार व्यक्ति थे और अपने कार्यालय में कुछ शत्रुओं की कुचाल का शिकार हो गए थे। कोर्ट-कचहरी के चक्कर में पैसा पानी की तरह बहा और आर्थिक स्थिति डांवाडोल हो गई। तभी उनकी पत्नी को किसी ने **मां वैभव लक्ष्मी** का व्रत करने का सुझाव दिया। उनकी पत्नी ने २१ व्रत का संकल्प लिया और मां की कृपा से व्रत पूरे होते-होते वे मुकदमा जीत गए। असली अपराधी पकड़े गए। बाद में मां की कृपा से कम्पनी वालों ने न केवल अपनी गलती मानी बल्कि दोबारा से नौकरी पर भी बहाल कर लिया।

आज उनके घर में सुख की वर्षा हो रही है।

वैभव लक्ष्मी व्रत कथा की पुस्तकें बांटें

व्रत के उद्यापन के समय '**वैभव लक्ष्मी व्रत कथा**' की पुस्तकों को बांटने का विधान तो है ही, यदि वैसे भी आप अपनी शक्ति-सामर्थ्य के अनुसार इन पुस्तकों का भक्तों में वितरण करें तो आने वाले बुरे दिनों के प्रवाह को मोड़ सकते हैं। 11, 21, 51, 101 पुस्तकों का वितरण करें और अपने दुर्भाग्य को सौभाग्य में बदलें। पुस्तक बांटने के लिए 'मनोज पब्लिकेशन्स' से सीधे संपर्क करें। पुस्तकें लागत मूल्य पर दी जाएंगी। *याद रखें—*

दुख में सिमरन सब करैं, सुख में करै न कोय।
जो सुख में सिमरन करै तो दुख काहे को होय॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

मां वैभव लक्ष्मी व्रत माहात्म्य

भक्तो ! **मां वैभव लक्ष्मी** इस संसार को बनाने, पालने और संहार करने वाली स्वयं आदिशक्ति हैं। वही ब्रह्मा, विष्णु, महेश की शक्ति हैं। उनके भंडारे अनन्त हैं। सच्चे मन से जो भी मां को पुकारता है कि हे मां मैं तेरी शरण में हूं, मुझे धन-धान्य दो, ऐश्वर्य दो, संतान दो...मां कभी निराश नहीं करतीं। वे अपने भक्तों की हर समस्या मां बनकर सुलझाती हैं।

जो श्रद्धा और विश्वास से उनकी शरण में जाता है, उसकी मनोकामना अवश्य पूरी होती है। **मां वैभव लक्ष्मी** की महिमा का बखान तो नारद, शारदा और सहस्रमुख वाले शेषनाग जी भी करने में असमर्थ हैं, फिर भला मैं अज्ञानी कहां तक कहूं। आप किसी भी समस्या से क्यों न घिरे हों—नौकरी, व्यापार, कर्जा, बीमारी, क्लेश, मुकदमा, शत्रुभय, आप सच्चे मन से मां की शरण में आकर यथाशक्ति मां के व्रत करें, मां के दरबार से कोई निराश नहीं जाता। **प्रेम से बोलिए...जय मां वैभव लक्ष्मी!**

भगवान कृष्ण द्वारा वर्णित श्री वैभव लक्ष्मी महिमा

पाण्डव कालीन कथा है। पाण्डव जुए में कौरवों से हारकर अपना सब कुछ गंवा चुके थे, तब एक दिन धर्मराज युधिष्ठिर से मिलने श्रीकृष्ण आए। धर्मराज तो पहले ही व्यथित थे। उन्होंने श्रीकृष्ण से कहा—'भगवन! कोई ऐसी विधि बताएं, जिससे हमारा खोया हुआ राज्य, धन-सम्पदा आदि हमें पुनः प्राप्त हो जाए।'

तब श्रीकृष्ण ने धर्मराज से कहा कि आप **वैभव लक्ष्मी** का व्रत करें। आपकी हर प्रकार की मनोकामना पूर्ण होगी। धर्मराज ने

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. Jain Public Domain. Digitization by eGangotri

आश्चर्य से पूछा कि यह वैभव लक्ष्मी कौन हैं और इनकी महिमा क्या है ?

कृष्ण बोले—'हे धर्मराज! आदि लक्ष्मी ही वैभव लक्ष्मी हैं। लक्ष्मी के आठ स्वरूपों का संयुक्त नाम वैभव लक्ष्मी है। जो भी व्यक्ति मां वैभव लक्ष्मी कहकर इन्हें स्मरण करता है और इनकी विधिवत पूजा एवं व्रतादि करता है, उसे धन-धान्य, मान-सम्मान, ऐश्वर्य, सन्तान, वीरता एवं विजय सभी कुछ वैभव लक्ष्मी के आशीर्वाद से प्राप्त हो जाता है।'

युधिष्ठिर बोले—'यह बताएं प्रभु कि लक्ष्मी और वैभव लक्ष्मी की उपासना में क्या भेद है ?'

'यह आपने बहुत सुन्दर प्रश्न पूछा है धर्मराज!' श्रीकृष्ण बोले—'सुनो, लक्ष्मी को चंचला कहा गया है। ये कभी भी अधिक दिनों तक एक स्थान पर नहीं रुकतीं। इनकी उपासना से केवल धन ही प्राप्त होता है, जबकि वैभव लक्ष्मी की उपासना से उपासक को आंतरिक और बाह्य (अन्दरूनी और बाहरी) दोनों ही प्रकार का ऐश्वर्य प्राप्त होता है। वैभव लक्ष्मी चंचला नहीं हैं। यह जिस पर प्रसन्न होती हैं, उसके यहां जब तक निवास करती हैं जब तक वहां सत्य, धर्म, प्रेम, भाईचारा और ईमानदारी रहती है।'

युधिष्ठिर—'प्रभु! कृपाकर बताए कि पूर्वकाल में यह व्रत किसने किया ?'

श्रीकृष्ण—'सर्वप्रथम बैकुण्ठाधिपति श्रीविष्णु जी ने वैभव लक्ष्मी का पूजन किया। तत्पश्चात महादेव और ब्रह्माजी और समय-समय पर इन्द्रादि सभी देवों ने देवी वैभव लक्ष्मी का पूजन किया। हे धर्मराज! देवराज इन्द्र ने तो बलि के भय से त्रस्त होकर देवी वैभव लक्ष्मी की शरण ली जिससे प्रसन्न होकर देवी ने श्री नारायण से वामनावतार कराकर उसे भयमुक्त किया।'

युधिष्ठिर—'हे प्रभु! यह व्रत अति उत्तम है, कृपाकर इसका वर्णन करें।'

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Digitized by eGangotri

भगवान श्रीकृष्ण बोले—'प्राचीन काल में बलि दैत्यों के राजा थे। वे महादानी थे। उनके राज्य में प्रजा हर तरह से सम्पन्न एवं सुखी थी। बलि श्रीनारायण का प्रिय भक्त था। एक बार उसमें अपने दानी होने का अभिमान आ गया, साथ ही उसकी इच्छा भी यहां तक बढ़ गई कि वह इन्द्रासन पाने का प्रयत्न करने लगा। इसके लिए उसने सौ अश्वमेध यज्ञ कर देवताओं को अमरावती से पराजित करने का संकल्प लिया। विधिवत यज्ञ प्रारम्भ हो गए। जैसे-जैसे यज्ञों की गिनती बढ़ती जाती थी, वैसे-वैसे देवों में, विशेषतः इन्द्र की घबराहट भी बढ़ती जा रही थी। यज्ञों के साथ-साथ राजा बलि की कीर्ति एवं शक्ति बढ़ती ही जा रही थी। उधर इन्द्र विचलित हुए जा रहे थे। ज्योंहि बलि के निन्यान्वें यज्ञ पूर्ण हुए, देवराज को लगा कि अब शीघ्र ही उनका सिंहासन राजा बलि के अधिकर में चला जाएगा। इस संकट पूर्ण काल में उन्होंने सभी देवताओं की सभा बुलाई और सभी के समक्ष इस संकट से मुक्ति का उपाय सुझाने की विनती की।'

अपने अपने मतानुसार सभी देवताओं ने उपाय बताया, किन्तु इन्द्रराज को उनमें से कोई भी उपाय न सूझा, तब देवगुरु बृहस्पति ने उन्हें **वैभव लक्ष्मी** की शरण में जाने का सुझाव दिया। इन्द्रदेव को यह सुझाव पसंद आया और उसी दिन उन्होंने **मां वैभव लक्ष्मी** की शरण लेकर उनके व्रतों का संकल्प किया।

इससे देवी **वैभव लक्ष्मी** प्रसन्न हुई और उन्होंने इन्द्र को दर्शन देकर कहा कि, हे देवराज! मेरी शरण में आने वाले की मनोकामना अवश्य पूर्ण होती है। कहो, तुम्हारी क्या इच्छा है?

देवराज इन्द्र बोले—'हे महाशक्ति, हे महामाई! मैं स्वर्ग के लिए चिंतित हूं। दैत्यराज बलि स्वर्ग पर अधिपत्य पाने के लिए अश्वमेध यज्ञ कर रहा है, यदि उसके यज्ञ सफलता पूर्वक सम्पन्न हो गए तो स्वर्ग में भी दैत्यों का राज्य हो जाएगा। सारी व्यवस्था

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दैत्यों के हाथों में चली जायगी, जिससे सारा सृष्टि चक्र प्रभावित होगा। दैत्य मनमानी करेंगे और चारों ओर अधर्म फैल जाएगा। हे मां वैभव लक्ष्मी! मैं समस्त देवताओं सहित आपकी शरण हूं। हे कल्याणकारिणी मां! मेरी चिंता दूर करो।'

'तुम शीघ्र ही चिंता मुक्त हो जाओगे देवराज। तुम श्रीहरि की शरण में जाओ।' ऐसा कहकर मां वैभव लक्ष्मी अन्तर्ध्यान हो गई।

तत्पश्चात इन्द्र सभी देवताओं के साथ श्री हरि की शरण में गए तथा उनकी स्तुति कर उन्हें अपनी व्यथा बताकर इस संकट से मुक्त कराने की प्रार्थना की।

तब भगवान श्री हरि ने इन्द्रादि देवों को आश्वासन दिया कि वैभव लक्ष्मी की कथनानुसार मैं अवश्य ही तुम्हें चिंतामुक्त करूंगा।

इसके बाद प्रभु श्री हरि ने वामन का अवतार लिया और एक छोटे ब्राह्मण का रूप धरकर राजा बलि के यहां पहुंचे और उससे भिक्षा की याचना की और तीन पग भूमि की इच्छा जाहिर की। राजा बलि के लिए भला तीन पग भूमि का क्या दान था। उन्होंने जल का संकल्प लेकर ब्राह्मण को दान देना स्वीकार कर लिया।

भगवान श्री हरि ने उसी समय विराट रूप धारण करके एक पग में पूरी पृथ्वी नाप ली और दूसरे पग में आकाश। फिर बलि से बोले—'राजा बलि! बताओ, तीसरा पग कहां धरूं?' राजा बलि प्रभु की पूरी लीला को समझ गया। उसे बोध हो गया कि इन्द्रासन पाने की उसकी महत्वाकांक्षा के चलते ही देवराज इन्द्र ने श्री नारायण को प्रसन्न कर यह स्थिति पैदा की है। तब उसने कहा—'प्रभु! तीसरा पग आप मेरे शीश पर रखें।'

श्री वामन ने तीसरा पग उसके सिर पर रखकर उसे पाताल में उतार दिया।

तत्पश्चात भगवान श्रीहरि अपने असली रूप में प्रकट होकर बोले—'बलि! मैं तुम्हारी भक्ति से प्रसन्न हूं। मुझे तुम्हें कुछ नहीं लालच

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection. Kathmandu, Nepal

रखकर तुमने इन्द्रासन हथियाने की चेष्टा की। इन्द्र देवी **वैभव लक्ष्मी** की शरण में चले गए और उनके द्वारा इन्द्रादि देवों को दिए गए अभयदान के कारण ही मैं तुम्हें यह दण्ड देने के लिए वामन अवतार लेकर इस धरा पर आया हूं।'

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

'मेरे अहो भाग्य प्रभु! चाहे किसी भी रूप में हुए, मुझे आपके दर्शन हो गए तो मैंने सबकुछ पा लिया।'

तब श्रीहरि उससे प्रसन्न हो गए और बोले—'मैं तुम्हारी निष्ठा और भक्ति से बहुत प्रसन्न हूं, तुम कोई वर मांगो।'

'हे नारायण! यदि आप मुझसे प्रसन्न ही हैं तो मुझे यह वर दें कि अश्विन माह के कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी से लेकर अमावस्या तक पूरी पृथ्वी पर मेरा राज्य रहे। इन दिनों में सभी लोग प्रसन्नचित्त होकर अपने-अपने घरों में प्रकाश करें, मिष्ठान आदि बनाएं और दीपावली नामक पर्व अश्विन कृष्णपक्ष की अमावस्या को मनाएं, इस दिन प्रत्येक घर में मां महालक्ष्मी का पूजन-अर्चन हो जिससे महालक्ष्मी मां प्रसन्न होकर सभी को सुख-समृद्धि का वरदान दें।'

तब श्रीहरि ने 'तथास्तु' कहा और अन्तर्ध्यान हो गए।

'हे धर्मराज!' श्रीकृष्ण बोले—'इसीलिए मैं तुमसे कहता हूं कि तुम देवी **वैभव लक्ष्मी** की शरण लो जो सभी सम्पत्तियों एवं सुख की दाता हैं।'

'हे केशव! आपने **मां वैभव लक्ष्मी** की महिमा सुनाकर मुझपर अतीव कृपा की है। आपकी आज्ञानुसार, आपके समक्ष ही मैं **मां वैभव लक्ष्मी** की पूजा एवं व्रतों का संकल्प लेता हूं।'

भक्तो! इस प्रकार श्रीकृष्णजी के कहने पर धर्मराज युधिष्ठिर ने अपने चारों भाइयों एवं द्रौपदी सहित **मां वैभव लक्ष्मी** की शरण ली और विजयश्री प्राप्त की।

बोलिए मां वैभव लक्ष्मी की—जय!

मां वैभव लक्ष्मी की—जय!

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री महालक्ष्मी स्तवन

या रक्ताम्बुजवासिनी विलासिनी चण्डांशु तेजस्विनी।
या रक्ता रुधिराम्बरा हरिसखी या श्री मनोह्लादिनी॥
या रत्नाकरमन्थनात्प्रगटिता विष्णोश्च या गेहिनी।
सा मां पातु मनोरमा भगवती लक्ष्मीश्च पद्मावती॥

महादेवी महालक्ष्मी नमस्ते त्वं विष्णु प्रिये।
शक्तिदायी महालक्ष्मी नमस्ते दुःखभंजनि। १।
श्रेयः प्राप्ति निमित्ताय महालक्ष्मी नमाम्यहम्।
पतितोद्धारिणी देवी नमाम्यहं पुनः पुनः। २।
वेदांस्त्वां संस्तुवन्ति हि शास्त्राणि च मुर्हुमुहु।
देवास्त्वां प्रणमन्तीहि लक्ष्मीदेवी नमोऽस्तु ते। ३।
नमस्तुस्ते महालक्ष्मी नमस्ते भवभंजनि।
भुक्तिमुक्ति च लभ्येत महादेवी त्वयि कृपा। ४।
सुख सौभाग्यं न प्राप्नोति यत्र लक्ष्मी न विद्यते।
न तत्फलं समाप्नोति महालक्ष्मी नमाम्यहम्। ५।
देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि मे परमं सुखम्।
नमस्ते आद्यशक्ति त्वं नमस्ते भवभंजनि। ६।
विधेहि देवि कल्याणं विधेहि परमां श्रियम्।
विद्यावन्तं यशस्वन्तं लक्ष्मवन्तं जनं कुरु। ७।
अचिन्त्य रूप-चरिते सर्वशत्रु विनाशिनी।
नमस्तेस्तु महामाये सर्व सुख प्रदायिनी। ८।
नमाम्यहं महालक्ष्मी नमाम्यहं सुरेश्वरी।
नमाम्यहं जगद्धात्री नमाम्यहं परमेश्वरी। ९।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री लक्ष्मी जी की आरती

जय लक्ष्मी माता, जय-जय लक्ष्मी माता।
तुमको निशिदिन सेवत, हर विष्णु विधाता॥ जय... ॥
ब्रह्माणी, रुद्राणी, कमला, तू ही जग-माता।
सूर्य-चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता॥ जय... ॥
दुर्गा रूप निरंजनि, सुख-सम्पति दाता।
जो कोइ तुमको ध्यावत, ऋद्धि-सिद्धि पाता॥ जय... ॥
तू ही है पाताल बसंती, तू ही शुभ दाता।
कर्म-प्रभाव-प्रकाशक, जग-निधि की त्राता॥ जय... ॥
जिस घर थारो वासा, ताहि में गुण आता।
कर सके सोइ कर ले, मन नहीं भड़काता॥ जय... ॥
तुम बिन यज्ञ न होवे, वस्त्र न कोई पाता।
खान-पान का वैभव, तुम बिन नहीं आता॥ जय... ॥
शुभ-गुण सुन्दर मुक्ता, क्षीर-निधि जाता।
रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोइ नहीं पाता॥ जय... ॥
श्री लक्ष्मीजी की आरती, जो कोई जन गाता।
उर उमंग अति उपजे, पाप उतर जाता॥ जय... ॥
स्थिर चर जगत रचाये, शुभ कर्म नर लाता।
कमल कुमार मैया की शुभ दृष्टि चाहता॥ जय... ॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीयंत्रम्

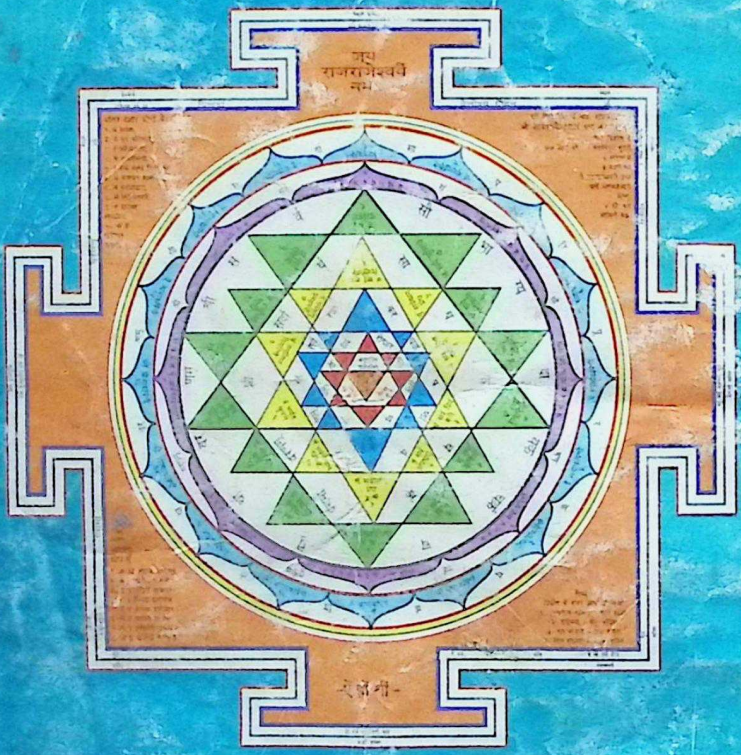

इस महालक्ष्मी यंत्र का नित्य दर्शन करने से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है और मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।

मनोज पॉकेट बुक्स

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal